INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY ADVANCED RESEARCH TRENDS
ISSN : 2349-7408
VOLUME IV ISSUE 2(4), DECEMBER, 2017

लक्ष्मीनारायण मिश्र जी के समस्या – नाटकों की कथावस्तुः युगीन परिवेश की बौद्धिक अभिव्यक्ति

डॉ.के. नागेश्वर राव
सह आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री वाई.एन. महाविद्यालय (स्वायत्त),
नरसापुर-534275, प.गो.जिल्ला

समस्या - नाटक विषय, विचार, भाषा और शिल्प-सभी दृष्टियों से सामान्य नाटकों से भिन्न है। समस्या-नाटककार का उद्देश्य युग और जीवन की बिभीषिकाओं, अंतर्विरोधों और विश्रृंखलताओं के प्रति पाठक या दर्शक की वितृष्णा को उदबुद्ध करना है। अँग्रेजी में नाटक के जिस आधुनिक विशिष्ट रूप को "प्रोब्लम प्ले" कहा जाता है, उसे ही हिन्दी में समस्या-नाटक की संज्ञा दी गयी है। इसमें किसी विशिष्ट परिस्थिति या पात्र-योजना के माध्यम से किसी केन्द्रीय समस्या का प्रस्तुतीकरण होता है। समस्या-नाटक में विविध नाट्य तत्वों का संयोजन आज के जटिल जीवन की किसी महत्वपूर्ण समस्या को लेकर उसी के इर्द-गिर्द किया जाता है। हिन्दी समस्या नाटकों के उद्भव और विकास की यात्रा जिन नाटककारों द्वारा पूरी होती है उनमें उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पं.लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, जगतीशचंद्र माथुर, हरिकृष्ण प्रेमी, पृथ्वीनाथ शर्मा, लक्ष्मीनारायण लाल तथा भुवनेश्वर प्रसाद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। वास्तव में भारतेन्दु-युग में भी नाटक बाल-विवाह, विधवा-विवाह जैसी कई समस्याओं से संबद्ध हो चले थे। ऐतिहासिक कथानक के माध्यम से आधुनिक समस्या को प्रतिपादित करने का कार्य जयशंकर प्रसाद के "ध्रवस्वामिनी" नाटक में भी हो चुका था। लेकिन संपूर्ण रूप में वर्तमान समाज के यथार्थ जीवन की विविध ज्वलंत समस्याओं को बौद्धिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का श्रेय सर्वप्रथम लक्ष्मीनारायण मिश्रजी को ही है। अतएव हिन्दी के समस्या-नाटकों के जन्मदाता मिश्रजी ही कहे जायेंगे। उनके समस्या-नाटक छः हैं "सन्यासी", "राक्षस का मंदिर", "मुक्ति का रहस्य", "राजयोग", "सिंदूर की होली", "आधीरात"। अनुभव की प्रामाणिकता, अनुभूति की सच्चाई के प्रबल आग्रह के कारण मिश्रजी के नाटकों ने हिन्दी साहित्य के विकास को एक नई गति प्रदान की है। मिश्रजी में अगाध पांडित्य तथा प्रचंड प्रतिभा का विरल योग है। वे राष्ट्रीय

विचारधारा के कट्टर समर्थक हैं। मिश्रजी ने पाश्चात्य शिक्षा-प्रणाली का विरोध कर नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा पर बल दिया है। लक्ष्मीनारायण मिश्रजी उदारता एवं सहिष्णुता के प्रतीक हैं। एक प्रयोगशील और अनुशासनप्रिय रचनाकार के रूप में उनके सृजनात्मक व्यक्तित्व के विविध पक्षों का प्रभाव उनकी प्रत्येक रचना पर दिखाई पडता है। अंतर्द्वन्द्वों से परिपूर्ण होते हुए भी उनका व्यक्तित्व सशक्त एवं बेचैन अवश्य है। मिश्रजी उपने जीवन-संघर्षों तथा विडंबनापूर्ण युगीन परिवेश से निरंतर अंतक्रिया के द्वारा एक विशिष्ट व्यक्तित्व को संप्राप्त कर चुके हैं। मिश्रजी को अपने आरंभिक जीवन में ही जो यथार्थ और कटु अनुभव प्राप्त हुए थे, उन्होंने मिश्रजी को एक बेहतर जिन्दगी की खोज करने की शक्ति दी। इसी कारण से उन्होंने अपनी एकांतिक पीडाओं को बडी गहराई से बहुतों के दुःखों से जोडा है और अपनी कृतियों में विभिन्न समस्याओं को लेकर विसंगतपूर्ण परिवेश पर प्रहार किया है। भारतीय जीवन-दर्शन का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर दिखाई पडता है।

मिश्रजी ने सामाजिक यथार्थ के आधार पर अपने नाटकों के लिये कथावस्तु का चयन किया है। मिश्रजी निश्चय ही कथ्य को आधार बनाकर कथा का ताना-बाना बुननेवालो नाटककार हैं। मिश्रजी के संपूर्ण-समस्या नाटकों की कथावस्तु का आधार आधुनिक समाज में व्याप्त परंपरागत विकृतियाँ हैं। आंतरिक इच्छा की प्राप्ति के लिये बाह्य बंधनों से संघर्ष होने के कारण एक अंतर्द्वन्द्व का जन्म होता है, इस अंतर्द्वन्द्व का कारण एक ओर प्रेम की रोमानी भावना औ दूसरी ओर समाज का यथार्थ। मिश्रजी के समस्या-नाटकों की कथावस्तु का यही मूल स्वर है। सभी समस्या-नाटकों की कथावस्तु "उत्पाद्य" है। "सन्यासी" की मुख्य कथा नारी समस्या पर आधारित है। इसमें तीन कथानकों का संयोजन है। प्रमुख कथा मालती और विश्वकांत के जीवन से संबंधित है, जिससे अन्य उपकथाएँ संबद्ध कर दी गई हैं। "राक्षस का मंदिर" की कथा में प्रमुख समस्या केवल वेश्या की समस्या न होकर मानव की कुप्रवृत्तियों की समस्या है। प्रमुख कथा रामलाल अश्करी-मुनीश्वर के त्रिकोण से संबंधित है। "मुक्ति का रहस्य" की कथावस्तु में समस्या प्रेममूलक है। मुख्य कथा उमाशंकर, डॉ.त्रिभुवननाथ और आशादेवी के त्रिकोण से संबद्ध है। अन्य सहयोगी पात्रों के रूप में नाटककार ने अन्य छोटी-मोटी समस्याओं को चित्रित किया है। "राजयोग" के कथानक में निहित समस्या राजकीय न होकर प्रेम की समस्या है, जिसका संबंध सामाजिक लांछन और चिरंतन नारीत्व से है। इस नाटक में एक ही प्रमुख कथानक है जो चंपा-नरेन्द्र और शत्रुसूदन से संबंधित है। इसमें अतिरिक्त रूप

से किसी उपकथा का समावेश नहीं किया गया है। "सिन्दूर की होली" की कथा चिरंतन नारीत्व की समस्या पर आधारित है, इसके प्रेम का आधार प्रथम दर्शन और प्राकृतिक आकर्षण हैं। रजनीकांत यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से कहीं भी इस नाटक में नहीं आता, फिर भी नाटक की मूल समस्या का और मनोद्वन्द्व का वही एकमात्र आधार है। नाटककार ने रजनीकांत के माध्यम से नाटक की समस्त कथाओं को संबद्ध कर दिया है। इस नाटक की कथावस्तु में मुख्य और उपकथा का कोई अंतर दृष्टिगत नहीं होता, क्योंकि रिखत के माध्यम से संयुक्त उकपकथा मुख्य कथा का ही कारण है और इसी आधार पर मुख्य कथा का नियोजन हुआ है। "आधीरात" कीकथा की समस्या प्रकृति में पुरुष के आकर्षण की समस्या है। एक नारी वह "माया" है जिसके चारों ओर पुरुष पात्र घूमते हैं। तीन पुरुषों की एक नारी और एक नारी के तीन पुरुष, इस कथानाक की संयोजना के कारण हैं। नाटक का मुख्य कथानक मायावती से संबंद्ध है।

विवेच्य नाटकों में कथावस्तु का संयोजन अपनी पूर्ववर्ती परंपरा को चयनात्मक दृष्टि से नये संस्कार देता है और उसे नये शिल्प के अनुरूप ढालने का प्रयत्न करता है। विवेच्य नाटकों में समाज के विविध रूपों का प्रत्यक्षीकरण हो जाता है। नाटककार मिश्र जी ने सामाजिक दृष्टि को लेकर अपने नाटकों के वस्तु-संयोजन में रोमांटिक बोध के साथ-साथ आधुनिक बोध जोडकर अपनी प्रयोगधर्मी चिन्तन वृत्ति व प्रयोजनमूलक जीवन-दृष्टि का परिचय दिया है। मिश्रजी भारतीय संस्कृति के महान अनुगमनकर्ता हैं। वस्तु के माध्यम से स्त्री-पुरुष के संबंधों की भौतिकता का स्पष्टीकरण हुआ है। "सन्यासी" नाटक में प्रेम के रोमानी पक्ष का उपहास है। रोमांस और यथार्थ के धरातल पर कथावस्तु का नियोजन हुआ है। इसके साथ व्यक्ति संबंधों और सामाजिक तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। "राक्षस का मंदिर" नाटक में सद्-असद् वृत्तियों का निरुपण हुआ है और जीनव की यथार्थ स्थितियों पर वस्तु का नियोजन किया गया है। "मुक्ति का रहस्य" नाटक में प्रेम संबंधों के रुपायन में स्वच्छंदतावादी एवं यथार्थवादी मूल्यों की भूमिका पर मिश्रजी ने बल दिया है। इसके साथ कथावस्तु में मानसिक संघर्ष का नियोजन और मान्यताओं के अंतर्विरोध का निरुपण भी नाटककार ने किया है। नाटक में संघर्ष के मूल तत्वों को पहचानकर समस्या का आदर्शवादी समाधान दिया गया है। "राजयोग" नाटक में प्रेमसमस्या का यथार्थवादी समाधान वस्तु का मूलस्वर है। इसके साथ-साथ इस नाटक में सामाजिक लांछन व चिरंतन नारीत्व से संबंधित प्रेम-समस्या का अंकन हुआ है। नाटक की

कथावस्तु का केन्द्रीय तत्व चिरंतन नारीत्व की समस्या ही है। "सिन्दूर की होली" नाटक में विधवा-विवाह की समस्या के सैद्धांतिक पक्षक का विश्लेषण किया गया है। बौद्धिक चिन्तन और भावुकता से नारी समस्याओं का निरुपण किया गया है। नारी के वैधव्य जीवन की समस्याओं का भारतीय परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण हुआ है। "आधीरात" नाटक में पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभाव को स्पष्ट किया गया है। एक रोमानी और अतिमानसिकता की अभिसृष्टि सामाजिक धरातल पर की गया है। मिश्रजी के नाटकों में प्रेम और यौन संबंधों का अंकन एवं नूतन रागात्मक उपलब्धि की अभिव्यक्त हुई है। विवेच्य नाटक अपने समय की किसी-न-किसी गंभीर समस्या को प्रतीकात्मक अभिव्यक्त देते हैं।

मिश्रजी ने भी मुक्त यथार्थ के स्तर पर युग-जीवन को अभिव्यक्ति का आधार बनाया है। विवेच्य नाटकों पर विश्वयुद्धोतर कालीन परिस्थितियों, पाश्चात्य नाट्च जगत की रंगमंचीय गति-विधियों, मार्क्स व फ्इड के विचारों का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित है। इसी कारण से विवेच्य नाटकों के वर्ण्य विषय और शिल्प में नये आयाम उजागर हुए हैं। तथनुरूप ये नाटक अपने परिवेश की यथार्थ तथा कलात्मक अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम बन गयो हैं। मिश्रजी के समस्या-नाटकों में उनकी यथार्थवादी एवं बुद्धिवादी चिन्तन-दृष्टि के अनुरूप युगीन स्थितियाँ व्याख्यायित हुई हैं। व्यक्ति, परिवार और समाज की विभिन्नसमस्याओं पर विचार करने के संदर्भ में न केवल यथार्थता को परखने तथा उसे स्पष्ट करने को ही प्राथमिकता दी गई है, बल्कि बुद्धिवादी धरातल पर समस्या के अनेक पहलुओं पर विचार-विमर्श करने की ओर ध्यान दिया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि मिश्र जी के समस्या-नाटकों ने हिन्दी के नाटकों को नया मोड दिया है। अपने बुद्धिवादी चिन्तन से भारतीय सामाजिक समस्याओं का संस्पर्श कर मिश्रजी ने हिन्दी में एक नये प्रयोग के रूप में, समस्या-नाटकों को जो स्वस्थ स्वरूप दिया है, वह स्थायी महत्व का कार्य है।

सहायक ग्रंथ **(Reference) :**

1. आधुनिक हिन्दी नाटक - डॉ. नगेंद्र - लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद - 1987
2. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - वाणी प्रकाशन दिल्ली - 1999
3. नाट्य समीक्षा - डॉ. दशरथ ओझा - नेषनल पब्लिषिंग हाऊस - दिल्ली - 1989

4. लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटक - डॉ.रामाश्रय रत्नेश - तक्षशिला प्रकाशन - कानपूर - 1987
5. समकालीन हिन्दी नाटक - डॉ. दशरथ ओझा - नेषनल पब्लिषिंग हाऊस - दिल्ली - 1989
6. हिन्दी नाटक और लक्ष्मीनारायण मिश्र - डॉ.बब्बन त्रिपाठी - लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद - 1989
7. हिन्दी के समस्या नाटक - डॉ. विनय कुमार - वाणी प्रकाशन दिल्ली - 1999
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल - राजकमल प्रकाशन - दिल्ली - 2001
9. हिन्दी नट्य समालोचना - डॉ. मांधाता ओझा - वाणी प्रकाशन दिल्ली - 1998
10. हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास - डॉ. सोमनाथ गुप्त - लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद - 1999
11. हिन्दी नाटक उद्भव एवम विकास - डॉ. दशरथ ओझा - राजकमल प्रकाशन - दिल्ली - 1999

पत्र पत्रिकाएँ -

1. आजकल - मार्च - 2006
2. आलोचना - सितंबर - 2002
3. नईधारा - दिसंबर - 2000
4. साहित्य संदेश - अप्रेल - 199
5. केरल भारती - फरवरी - 2008